اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ
لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۞ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ جَعَلَ خِلٰلَهَآ
اَنْهٰرًا وَّ جَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَ جَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ اَمَّنْ
يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ يَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَ يَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۞
اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ مَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى
اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ
هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞

आयत नं० 60 से 64

(ऐ लोगो यह बताओ कि) **वो ज़ात** (बेहतर है) **जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया और उसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे हम ने रौनक़दार बाग़ उगाए** (वर्ना) **तुम्हारे बस में तो नहीं था कि तुम उन** (बाग़ों) **के पेड़ों को उगा सको,** (यह सुन कर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में शरीक होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर मुशरिक लोग फिर भी नहीं मानते) **बल्कि ये ऐसे लोग हैं कि** (दूसरों को) **अल्लाह के बराबर ठहराते हैं(60)** (अच्छा फिर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जिसने ज़मीन को** (लोगों के) **ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच-बीच में नहरें बनाईं और उस** (ज़मीन) **के** (ठहराने के) **लिए पहाड़ बनाए और दो दरियाओं के बीच में एक आड़ बनाई,** (यह सुनकर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (ख़ुदाई का साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर मुश्रिक नहीं मानते) **बल्कि उनमें ज़्यादा तो** (अच्छी तरह) **समझते भी नहीं(61)** (अच्छा बताओ ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो तड़पते आदमी की दुआ सुनता है जब वो उस को पुकारता है और** (उसकी) **मुसीबत को दूर कर देता है और तुम को ज़मीन में पहले लोगों का वारिस बनाता है,** (यह सुनकर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में शरीक होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर) **तुम लोग बहुत ही कम याद रखते हो(62)** (अच्छा फिर और ख़ूबियां सुन कर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो तुम को जंगल और दरिया के अन्धेरों में रास्ता दिखाता है और जो हवाओं को बारिश से पहले भेजता है जो** (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिलों को) **ख़ुश**

कर देती हैं, (यह सुन कर अब बताओ) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (हरगिज़ नहीं) **बल्कि अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से बहुत ऊपर है**(63) (अच्छा फिर दूसरी ख़ूबियां व अहसान सुन कर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो सारी मख़लूक़ को पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा कर देगा और जो आसमान और ज़मीन से** (पानी बरसाकर और पेड़ पौधे उगाकर) **तुम को रोज़ी देता है,** (यह सुन कर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है** (और अगर वो यह सुन कर भी कहें कि हां और माबूद भी इबादत के लाइक़ हैं तो) **आप कहिए कि** (अच्छा) **तुम** (उन के इबादत के हक़दार होने पर) **अपनी दलील लाओ अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो**(64)

नोटः- एक हदीस में है कि ''तीन दुआ़एें ज़रूर क़ुबूल होती हैं जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं एक (सताए हुए) मज़लूम की दुआ दूसरे मुसाफ़िर की दुआ तीसरे बाप जो अपनी औलाद के लिए बद्दुआ करे''। क्योंकि ये तड़पते दिलों की दुआ़एं हैं।

और एक हदीस में है कि ''अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं किसी मज़लूम की दुआ को कभी रद्द (यानी नामन्जूर) नहीं करूंगा चाहे वो किसी काफ़िर के मुंह से हो''। (क़ुरतबी)

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝٦٥ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝٦٦ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝٦٧ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٦٨ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٦٩ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝٧٠ وَيَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٧١ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٧٢ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٧٣ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ۝٧٤ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٧٥

आयत नं० 65 से 75

(ये लोग जो क़ियामत का वक़्त न बताने से यह कहते हैं कि नहीं आएगी) **आप कह दीजिए**

जितनी मख़लूक़ आसमानों और ज़मीन में मौजूद हैं (उनमें से) **कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता सिवाए अल्लाह तआला के, और** (इसी वजह से) **उन को यह ख़बर** (भी) **नहीं कि वो कब दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे** (यानी अल्लाह तआला को तो बेबताए सब पता है और किसी को बेबताए कुछ भी पता नहीं और ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका पहले पता नहीं और वो होती हैं ऐसे ही क़ियामत के वक़्त की किसी को ख़बर नहीं दी गई लेकिन आएगी ज़रूर मगर काफ़िर क़ियामत का इनकार करते हैं)(65) **बल्कि आख़रत के बारे में इन** (काफ़िरों) **का इल्म बेबस होकर रह गया है बल्कि ये लोग उस** (के आने) **से शक में हैं बल्कि ये उससे अन्धे बने हुए हैं** (कि शक दूर करने वाली दलीलों पर नज़र नहीं करते इसलिए सही रास्ता दिखाई नहीं देता)(66) **और ये काफ़िर यह कहते हैं कि क्या हम लोग जब** (मरकर) **मिट्टी हो गये और** (इसी तरह) **हमारे बड़े भी तो क्या** (फिर) **हम** (ज़िन्दा करके क़बरों से) **निकाले जाएंगे**(67) **इस का तो हम से और हमारे बड़ों से** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) **पहले से वादा होता चला आया है** (क्योंकि सभी पैग़म्बरों की यह बात मशहूर है लेकिन न आज तक हुआ और न किसी ने बताया कि कब होगा इस से पता चलता है कि) **ये बेसनद बातें हैं जो पहले लोगों से कही हुई चली आ रही हैं**(68) **आप कह दीजिए कि** (सारी दलीलें सुनकर भी शक में हो तो) **तुम ज़मीन में चल फिर कर देखो कि मुजरिमों का अन्जाम क्या हुआ** (क्योंकि उनके हलाक होने और अज़ाब आने के आसार अब तक बाक़ी थे)(69) **और** (अगर इन नसीहतों के बावजूद फिर भी नहीं मानते तो) **आप उन पर ग़म न कीजिए और जो कुछ ये शरारतें कर रहे हैं उससे दिल में न कुढ़ें** (कि और पैग़म्बरों के साथ भी ये ही मुआमला हुआ है)(70) **और ये लोग** (बेझिजक) **यह कहते हैं कि यह वादा** (अज़ाब का) **कब होगा अगर तुम सच्चे हो** (तो बताओ)(71) **आप कह दीजिए कि अजब नहीं कि जिस अज़ाब की तुम जल्दी मचा रहे हो उसमें से कुछ तुम्हारे पास ही आ लगा हो**(72) **और** (अब तक जो देर हो रही है तो उस की वजह यह है कि) **आप का रब लोगों पर बड़ी महरबानी करने वाला** (है इसलिए मुहलत दे रक्खी) **है व लेकिन अक्सर आदमी** (इस बात पर) **शुक्र नहीं करते** (कि देरी को ग़नीमत समझें और मुहलत से फ़ाइदा उठाएं)(74) **और** (मुहलत से ये न समझें कि इन कामों की कभी सज़ा ही न होगी क्योंकि) **आप के रब को सब ख़बर है जो कुछ उनके दिलों में छुपा है और जिस को वो ऐलानियां करते हैं। और** (सब ख़ुदा के दफ़्तर में भी लिखा है और ये ही नहीं बल्कि) **आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छुपी चीज़ नहीं जो** (तक़दीर की) **खुली किताब में** (दर्ज) **न हो**(75)

नोटः- ऊपर आयत में साफ़ तरीक़े से बता दिया गया कि ग़ैब का इल्म अल्लाह की ख़ास सिफ़त है जिसमें कोई फ़रिशता या नबी व रसूल भी शरीक नहीं हो सकता।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ
الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ
عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ
دَابَّةً مِنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

आयत नं० 76 से 82

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर उन बातों (की असलीयत) **को खोलता है जिसमें वो झगड़ा करते हैं(76) और वो ईमानदारों के लिए** (ख़ास) **हिदायत और** (ख़ास) **रहमत है** (हिदायत नेक कामों की और रहमत उनके फल)(77) **बेशक आप का रब उनके बीच अपने हुक्म से** (क़ियामत के दिन खुला) **फ़ैसला कर देगा** (उस वक़्त पता चल जाएगा कि सच्चा दीन क्या था और झूट क्या तो ऐसे लोगों पर क्या अफ़सोस किया जाए) **और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **इल्म वाला** (है बिना उसकी मर्ज़ी के कोई किसी को नुक़सान नहीं पहुंचा सकता) **है(78) तो आप अल्लाह पर भरोसा रखिए** (अल्लाह की मदद ज़रूर होगी, क्योंकि) **आप खुले हक़** (और सही रास्ते) **पर हैं(79) आप मुर्दों को** (अपनी बात) **नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हैं** (ख़ास कर) **जब कि वो पीठ फेर कर चल दें(80) और न आप अन्धों को उन की गुमराही से** (बचाकर) **रास्ते पर ला सकते हैं** (यानी इन ईमान न लाने वालों की हालत बहरों, अन्धों और मुर्दों की सी हैं), **आप तो सिर्फ़ उन ही को** (अपनी बात) **सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं** (और) **फिर वो मानते भी हैं(81) और जब** (क़ियामत का) **वादा उन** (लोगों) **पर पूरा होने को होगा** (यानी क़ियामत का ज़माना नज़दीक आ पहुंचेगा) **तो हम उन के लिए ज़मीन से एक** (अजीब) **जानवर निकालेंगे कि वो उन से बातें करेगा कि** (काफ़िर) **लोग हमारी** (यानी अल्लाह तआला की) **आयतों पर** (ख़ास कर उन आयतों पर जो क़ियामत के बारे में हैं) **यक़ीन नहीं लाते थे** (मगर अब क़ियामत आ पहुंची उसकी निशानियों में से एक निशानी मेरा निकलना भी है)(82)।

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत की आख़री निशानियों में सबसे पहले सूरज पच्छम से निकलेगा फिर ज़मीन से एक जानवर निकलेगा जो लोगों से बातें करेगा और मोमिन व काफ़िर को पहचानेगा और यह वो वक़्त होगा कि तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा किसी का ईमान लाना क़ुबूल न होगा। (इब्ने कसीर)

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ
وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۸۵﴾ اَلَمْ
يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِى
الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ
تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ مَنْ
جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى
النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾

आयत नं० 83 से 90

और जिस दिन (क़ब्रों से ज़िन्दा करने के बाद) **हम हर उम्मत में से** (यानी पहली उम्मतों में से भी और इस उम्मत से भी) **एक-एक गिरोह उन लोगों का** (हिसाब के लिए) **जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाया करते थे फिर उन को** (चलने में पिछलों से आ मिलने के वास्ते) **रोका जाएगा** (ताकि आगे पीछे न रहें सब साथ होकर चलें क्योंकि गिनती में बहुत ज़्यादा होंगे)(83) **यहां तक कि जब हाज़िर हो जाएंगे तो** (हिसाब शुरू होगा और) **अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि क्या तुम ने मेरी आयतों को पूरी तरह समझे बिना ही झुटला दिया था** (और इतना ही नहीं) **बल्कि** (याद करो इसके सिवा) **और भी क्या-क्या काम करते** (रहे जैसे पैग़म्बरों को और ईमान वालों को सताना जो झुटलाने से भी बढ़ कर है और इसी तरह दूसरे कुफ़्र के काम में लगे) **रहे**(84) **और** (अब वो वक़्त है कि) **उन पर** (अज़ाब का) **वादा पूरा हो गया** (यानी सज़ा के हक़दार हो गये) **इस वजह से कि** (दुनिया में) **उन्होंने** (बड़े-बड़े) **ज़ुल्म** (और गुनाह के काम) **किये थे सो** (चूंकि सबूत पक्का है इसलिए) **वो लोग** (मजबूरी जिताने की) **बात भी न कर सकेंगे**(85) **क्या उन्होंने नहीं देखा कि**

हम ने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें (और यह आराम मौत की तरह है) **और दिन बनाया जिसमें देखें भाले** (और यह जागना मौत के बाद ज़िन्दगी जैसा है), **बेशक इस** (रोज़ाना सोने -जागने) **में** (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने पर) **बड़ी दलीलें हैं उन** (ही) **लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं**(86) **और जिस दिन सूर में** (पहली) **फूंक मारी जाएगी तो जितने आसमान और ज़मीन में** (रहने वाले फ़रिशते व इन्सान) **हैं सब घबरा जाएंगे** (और फिर मर जाएंगे और जो मर चुके हैं उनकी रूहें बेहोश हो जाएंगी) **मगर जिस को अल्लाह चाहे** (वो इस घबराहट और मौत से बचा रहेगा), **और** (कोई भाग न सकेगा बल्कि) **सब के सब उसी के सामने दबे झुके हाज़िर रहेंगे**(87) **और तुम** (इस वक़्त) **पहाड़ों को ऐसी हालत में देख रहे हो जिससे** (उन की मज़बूती से) **तुम को ऐसा लगता है कि ये** (सदा यूंही जमे रहेंगे और कभी अपनी जगह से) **हिलेंगे नहीं हालांकि** (उस वक़्त उनकी यह हालत होगी कि) **वो बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे,** (और इस पर अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **यह अल्लाह का काम होगा जिस ने हर चीज़ को** (ठीक-ठीक) **बना रक्खा है** (वो ही उन की हालत को बदल देगा), **यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है**(88) **जो आदमी नेकी करेगा** (यानी ईमान लाएगा) **सो** (वो ईमान लाने पर जिस सवाब का हक़दार है) **उस आदमी को उस** (नेकी के सवाब) **से बेहतर** (सवाब) **मिलेगा, और वो बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे**(89) **और जो आदमी बुराई** (यानी कुफ़्र व शिर्क) **लाएगा तो वो लोग औंधे मुंह आग में डाल दिये जाएंगे,** (और उनसे कहा जाएगा कि) **तुम को उन्हीं कामों की सज़ा दी जा रही है जो तुम** (दुनिया में) **किया करते थे** (यह अज़ाब बे वजह नहीं)(90)

नोटः- नेक अमल उसी वक़्त नेक कहलाने के क़ाबिल होता है जबकि उसकी पहली शर्त ईमान मौजूद हो।

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾
وَأَنْ أَتْلُوَا الْقُرْآنَ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

आयत नं० 91 से 93

(ऐ पैग़म्बर लोगों से कह दीजिए कि) **मुझे तो ये ही हुक्म मिला है कि मैं इस शहर**

(मक्का) **के** (सच्चे) **मालिक की इबादत किया करूं जिसने इस** (शहर) **को इज़्ज़त बख़्शी है** (मतलब यह कि इबादत में किसी को साझी न करूं) **और** (उसकी इबादत क्यों न की जाए जबकि) **सब चीज़ों का मालिक वो ही है, और मुझ को यह** (भी) **हुक्म हुआ कि मैं** (अक़ीदों और सब कामों में) **ताबेदार रहूं** (यह तो तौहीद का हुक्म हुआ)(91) **और** (मुझको) **यह** (भी हुक्म मिला है) **कि मैं** (तुम को) **क़ुरआन पढ़-पढ़ कर सुनाऊं** (यानी अल्लाह के हुक्मों को पहुचाऊं जो पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी है) **सो** (मेरे हुक्म पहुंचाने के बाद) **जो आदमी राह पर आएगा तो अपने ही फ़ाइदे के लिए राह पर आएगा** (यानी उसको अज़ाब से रिहाई और जन्नत की अनमिट नेमतें मिलेंगी) **और** (मैं उससे कोई दुनिया का नफ़ा नहीं चाहता तो) **जो आदमी गुमराह रहेगा तो आप कह दीजिए कि** (मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो सिर्फ़ डराने वाले** (यानी हुक्म सुनाने वाले) **पैग़म्बरों में से हूं**(92) **और आप** (यह भी) **कह दीजिए कि सब ख़ूबियां ख़ालिस अल्लाह के लिए साबित हैं वो मुझ को जल्दी ही अपनी निशानियां** (क़ियामत की) **दिखा देगा सो तुम** (उस वक़्त) **उन को पहचानोगे** (जब कि पहचानने से कोई फ़ाइदा न होगा), **और** (अपने बुरे कामों की सज़ा भी भुगतना पड़ेगी क्योंकि) **आप का रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम सब लोग कर रहे हो**(93)

28-सूरत-क़सस

इस मक्की सूरत में ‘88’ आयतें और ‘9’ रूकू हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓمّٓ ۝۱ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝۲ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۳ اِنَّ
فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ يَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝۴ وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝۵ وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَ نُرِىَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝۶ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَ لَا تَخَافِىْ وَ لَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ
اِلَيْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۷ فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ حَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ
جُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝۸ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّىْ وَ لَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ
نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۹ وَ اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِىْ بِهٖ لَوْ لَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى
قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۰ وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۱۱ وَ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝۱۲
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۱۳

आयत नं० 01 से 13

तासीम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **ये आयतें** (जो आप पर वही की जाती हैं हुक्मों को) **साफ़-साफ़ बयान करने वाली किताब** (यानी क़ुरआन) **की** (आयतें) **हैं**(02) (जिनमें इस जगह) **हम आप को मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और फ़िरऔन का कुछ क़िस्सा ठीक-ठीक पढ़ कर** (यानी उतार कर) **सुनाते हैं उन लोगों के** (नफ़े के) **लिए जो कि ईमान रखते हैं**(03) **फ़िरऔन** (मिस्र की) **ज़मीन में बहुत चढ़ गया था और उसने वहां के रहने वालों को**

अलग-अलग गिरोह में बान्ट रक्खा था (इस तरह कि अपनी क़ौम के लोगों को इज़्ज़तदार बना रक्खा था और बनी इस्राईल को दबा रक्खा था) **कि उनमें से एक गिरोह** (यानी बनी इस्राईल) **का ज़ोर घटा रक्खा था** (इस तरह से कि) **उन के बेटों को** (जो नये पैदा होते थे जल्लदों के हाथों) **ज़बह कराता था और उनकी औरतों** (यानी लड़कियों) **को ज़िन्दा रहने देता** (था ताकि उन से ख़िदमत ली जाए और उन से ख़तरा भी न) **था, बेशक वो बड़ा फ़सादी था(04)** (बस फ़िरऔन तो यह सोचता था) **और हम यह चाहते थे कि जिन लोगों का** (मिस्र की) **ज़मीन में ज़ोर घटाया जा रहा था हम उन पर** (दुनिया व दीन का) **अहसान करें और** (वो अहसान यह कि) **उन को** (दीन में) **इमाम बनाएं और** (दुनिया में) **उन को** (उस मुल्क का) **मालिक बनाएं(05) और ज़मीन में उन को हुकूमत दें और फ़िरऔन और हामान और उनके साथियों को उन** (बनी इस्राईल) **की तरफ़ से वो** (नागवार) **बातें दिखाएं जिन से वो बचाव कर रहे थे** (यानी क़ौम को और हुकूमत को बचाना, क्योंकि फ़िरऔन को एक ख़्वाब के बारे में किसी नजूमी (ज्योतिषी) ने कह दिया था कि बनी इस्राईल में एक ऐसा लड़का पैदा होगा जो तुम्हारी हुकूमत ख़त्म कर देगा इसलिए उसने बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करने का हुक्म दिया)**(06) और** (जब मूसा अलैहिस्सलाम उसी ज़माने में पैदा हुए तो) **हमने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की मां को इल्हाम किया** (यानी दिल में बात डाली) **कि** (जब तक इन को छुपाया जा सके) **तुम इनको दूध पिलाओ फिर जब तुम को इन के बारे में** (जासूसों के ख़बर होने का) **ख़तरा हो तो** (बेखटक) **इन को** (सन्दूक़ में रख कर) **दरिया में डाल देना और न तो** (डूबने का) **खटका रखना और न** (जुदाई पर) **ग़म करना** (क्योंकि) **हम उन को फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुंचा देंगे और** (अपने वक़्त पर) **उन को पैग़म्बर बनाएंगे(07)** (बस मां ने ऐसा ही किया जब सन्दूक़ किनारे लगा) **तो फ़िरऔन के लोगों ने मूसा** (अलैहिस्सलाम को यानी सन्दूक़) **को उठा लिया ताकि वो उन उन लोगों के दुशमनी और ग़म का सामान बनें, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के साथी** (इस बारे में) **बहुत चूके** (कि अपने दुशमन को अपने घर में पाला)**(08) और** (जब वो सन्दूक़ से निकाल कर फ़िरऔन के सामने लाए गये तो) **फ़िरऔन की बीवी** (हज़रत आसिया) **ने** (फ़िरऔन से) **कहा कि यह** (बच्चा) **मेरी और आप की आंखों की ठन्डक है** (यानी इसको देख कर जी ख़ुश हुआ करेगा, तो) **इसको क़त्ल मत करो अजब नहीं कि** (बड़ा होकर) **हम को कुछ फ़ाइदा पहुंचा दे या हम उस को** (अपना) **बेटा ही बनालें और उन लोगों को** (अन्जाम की) **ख़बर न थी** (कि यह वो ही बच्चा है जिसके हाथों फिरऔन की हुकूमत बर्बाद होगी)**(09) और** (उधर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की मां का दिल बेचैन था,**

(और बेचैनी भी ऐसी कि) **क़रीब था कि वो सारा राज़ खोल देतीं अगर हम ने उन के दिल को संभाला न होता कि वो** (हमारे वादे पर) **यक़ीन किये** (बैठी) **रहें**(10) **उन्होंने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की बहन** (यानी अपनी बेटी) **से कहा ज़रा मूसा का पता तो लगा सो** (वो चलीं और वहां पहुंची और) **उन्होंने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को दूर से देखा और उन लोगों को यह ख़बर न थी** (कि ये उनकी बहन हैं और इस तलाश में आई हैं)(11) **और हम ने पहले ही से** (यानी जब से सन्दूक़ से निकले थे) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **पर दूध पिलाने वालियों की बन्दिश कर रक्खी थी** (यानी किसी का दूध न लेते थे) **सो वो** (इस हाल को देख कर मौक़ा पाकर) **कहने लगीं क्या मैं तुम लोगों को किसी ऐसे घराने का पता बताऊं जो तुम्हारे लिए इस बच्चे को पालें और वो** (अपनी आदत के मुवाफ़िक़ दिल से) **इस का भला चाहने वाले हों**(12) **बस** (उन लोगों ने ऐसे वक़्त में कि दूध पिलाने की मुश्किल पड़ रही थी इस राय को ग़नीमत समझा बस इस तरह मूसा अलैहिस्सलाम उन की मां की गोद में दिये गये जाते ही दूध पीना शुरू कर दिया और उन लोगों की इजाज़त से चैन से अपने घर ले आईं और कभी-कभी जाकर उनको दिखा आतीं इस तरह) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम को अपने वादे के मुवाफ़िक़) **उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया ताकि** (अपनी औलाद को देख कर) **उनकी आंखें ठन्डी हों और ताकि** (जुदाई के) **ग़म में न रहें और ताकि इस बात को** (और ज़्यादा यक़ीन के साथ) **जान लें कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा** (होता) **है लेकिन** (अफ़सोस की बात है कि) **अक्सर लोग** (यानी काफ़िर इसका) **यक़ीन नहीं रखते**(13)।

नोटः- बाज़ रिवायत में है कि एक बार जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप को आपका वतन जिसमें आप पैदा हुए याद आता है तो आपने फ़रमाया कि हां ज़रूर याद आता है इस पर जिब्रील अमीन ने क़ुरआन की यह सूरत सुनाई जिसके आख़ीर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की ख़ुशख़बरी दी है कि अन्जामकार मक्का फ़तह हो कर आपके क़ब्ज़े में आए।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ
غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۚ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ
شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۚ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ

عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ
يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ
يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا
تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ
يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾

आयत नं० 14 से 21

और जब (मूसा परवरिश पाकर) **अपनी भरी जवानी** (की उम्र) **को पहुंचे और** (ताक़त व समझदारी में) **कमाल को पहुंच गये तो हम ने उन को हिकमत और इल्म दिया** (यानी पैग़म्बरी से पहले ही ऐसी समझ दी कि अच्छाई व बुराई को जान लें), **और हम नेक लोगों को यूंही बदला दिया करते हैं** (यानी नेक कामों से इल्म में तरक़्क़ी होती है और इसमें यह भी इशारा है कि फ़िरऔन के तरीक़े को मूसा अलैहिस्सलाम ने कभी नहीं अपनाया)(14) **और** (एक बार ऐसा हुआ कि) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **शहर में** (कहीं बाहर से) **ऐसे वक़्त पहुंचे कि वहां के** (अक्सर) **रहने वाले बेख़बर** (सो रहे) **थे तो उन्होंने वहां दो आदमियों को लड़ते देखा, एक तो उनकी बिरादरी** (यानी बनी इस्राईल) **में का था और दूसरा उन की दुशमन क़ौम** (यानी फ़िरऔनियों) **में से था** (दोनो किसी बात पर उलझ रहे थे और ज़्यादती उस फ़िरऔनी की थी) **तो वो जो उन की बिरादरी का था उसने** (जो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम को देखा तो उन) **से उसके मुक़ाबिले में जो कि उन के दुशमनों में से था मदद चाही** (मूसा अलैहिस्सलाम ने पहले उस को समझाया जब इस पर भी वो बाज़ न आया) **तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ज़ुल्म से रोकने के लिए) **उस को** (एक) **घूंसा मारा तो उसका काम ही तमाम कर दिया** (यानी अचानक वो मर ही गया), **मूसा** (अलैहिस्सलाम इस उम्मीद के ख़िलाफ़ नतीजे से बहुत पछताए और) **कहने लगे कि यह तो शैतानी हरकत हो गई, बेशक शैतान** (भी इन्सान का) **खुला दुशमन है किसी ग़लती में डाल देता है**(15) (और पछताकर अल्लाह तआ़ला से दुआ करते हुए) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझ से ग़लती हो गई आप मुआफ़ कर दीजिए सो अल्लाह तआ़ला ने मुआफ़ कर दिया, बेशक वो बख़्शने वाला महरबान है**(16) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ग़लती से तौबा के साथ आगे के बारे में यह भी) **कहा कि या रब मेरे चूंकि**

आने मुझ पर (बड़े-बड़े) **इनआम किये हैं तो कभी मैं मुजरिमों की मदद न करूंगा**(17) **फिर मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को डर और घबराहट की हालत में शहर में सुबह हुई कि अचानक** (देखते क्या हैं कि) **वो ही आदमी जिसने कल उन से मदद चाही थी वो फिर उन को** (मदद के लिए) **पुकार रहा है** (कि किसी और से उलझ पड़ा था), **मूसा** (अलैहिस्सलाम यह देख कर और कल की हालत याद करके उस पर नाराज़ हुए और) **उससे कहने लगे बेशक तू खुला बेराह** (आदमी है रोज़ लोगों से लड़ा करता) **है**(18) **फिर** (यह देख कर कि ज़्यादती फ़िरऔनी की है उस को रोकने के लिए) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उस पर हाथ बढ़ाया जो दोनों का दुशमन था** (यानी फ़िरऔनी था तो इस्राईली समझा कि मुझ पर पकड़ है इसलिए घबरा कर) **वो** (इस्राइली) **कहने लगा ऐ मूसा क्या** (आज) **मुझ को क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि कल एक आदमी को क़त्ल कर चुके हो** (मालूम होता है कि) **बस तुम दुनिया में अपना ज़ोर बिठाना चाहते हो और सुलह** (और मिलाप) **करवाना नहीं चाहते**(19) **और** (यह बात उस फ़िरऔनी ने सुनी बात फ़िरऔन तक पहुंच गई और दरबार में मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने की राय पास हो गई तो) **एक आदमी** (जो मूसा अलैहिस्सलाम के हमदर्द थे वो) **शहर के** (उस) **किनारे से** (जहां यह मशवरा हो रहा था मूसा अलैहिस्सलाम के पास नज़दीक की गलियों से) **दौड़ते हुए आए** (और) **कहने लगे कि ऐ मूसा दरबार वाले आप के बारे में मशवरा कर रहे हैं कि आप को क़त्ल कर दें सो आप** (यहां से) **निकल जाइये बेशक मैं आप का भला चाहने वाला हूं**(20) **बस** (यह सुनकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **वहां से** (किसी तरफ़ को) **निकल गये डर और घबराहट की हालत में** (और चूंकि रास्ता मालूम न था दुआ करते हुए) **कहने लगे या रब मेरे मुझ को इन ज़ालिम लोगों से बचा लीजिए** (और अमन की जगह पहुंच दीजिए)(21)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि मज़लूम चाहे काफ़िर या फ़ासिक़ ही हो। उसकी मदद करना चाहिए और किसी मुजरिम ज़ालिम की मदद करना जाइज़ नहीं।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ
اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى
يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ
خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ

لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَ قَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا
يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ
هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَ مَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ
سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ
وَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 22 से 28

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम यह दुआ करके एक तरफ़ को चले तो अल्लाह की मदद से) **मदयन की तरफ़ चल दिये** (और) **कहने लगे कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझ को** (किसी अमन की जगह का) **सीधा रास्ता चला देगा** (बस ऐसा ही हुआ और मदयन जा पहुंचे)(22) **और जब मदयन के पानी** (यानी कुंवे) **पर पहुंचे तो उस पर** (बहुत से) **आदमियों का एक मजमा देखा जो** (उस कुंवे से खींच-खींच कर अपने जानवरों को) **पानी पिला रहे थे, और उन लोगों से एक तरफ़** (अलग) **दो औरतें देखीं कि वो** (अपनी बकरियां) **रोके खड़ी हैं, मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उनसे) **पूछा तुम क्या चाहती हो, वो दोनो बोलीं कि हम** (अपने जानवरों को) **उस वक़्त तक नहीं पिलाते जब तक ये चरवाहे** (जो कुंवे पर पानी पिला रहे हैं) **पानी पिला कर** (जानवरों को) **हटा कर न ले जाएं** (एक तो शर्म की वजह से दूसरे मर्दों से कमज़ोर क्या उलझें) **और** (इस हालत में हम आते भी नहीं मगर) **हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं** (और घर पर और कोई काम करने वाला ही नहीं और काम ज़रूरी है इस मजबूरी को हम को आना पड़ता है)(23) **बस** (यह सुनकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम को तरस आया और उन्हों)**ने उन के लिए पानी** (खींच कर उनके जानवरों को) **पिलाया** (और उनको इन्तिज़ार और पानी खींचने की तकलीफ़ से बचाया) **फिर** (वहां से) **हट कर** (एक) **साये** (की जगह) **में जा बैठे फिर** (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ की कि या रब मेरे** (इस वक़्त) **जो नेमत भी** (थोड़ी या ज़्यादा) **आप मुझ को भेज दें मैं उस का** (सख़्त) **ज़रूरत मन्द हूं** (क्योंकि इस सफ़र में कुछ खाने पीने को न मिला था, और उधर उन लड़कियों ने घर जाकर सारा क़िस्सा अपने बाप को सुनाया उन्होंने एक लड़की को भेजा कि उनको बुला लाओ)(24) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के पास एक लड़की आई कि शर्माती हुई चलती थी** (जो कि शरीफ़ों की आदत होती है, और आकर) **कहने लगी कि मेरे अब्बा तुम को बुलाते हैं ताकि तुम को उस का**

बदला दें जो तुम ने हमारे लिए (हमारे जानवरों को) **पानी पिला दिया था,** (मूसा अलैहिस्सलाम बदला तो नहीं ले सकते थे मगर अमन की जगह की तलाश में थे इसलिए एक शरीफ़ नेक इन्सान के बुलावे पर चल दिये और लड़की से कहा तुम मेरे पीछे हो जाओ ज़बान से रास्ता बता देना यह इसलिए किया ताकि उस पर नज़र न पड़े) **तो जब उन** (बुज़ुर्ग) **के पास पहुंचे और उन से सारी बात बताई तो उन्होंने** (तसल्ली दी और) **कहा कि** (अब) **मत डरो तुम ज़ालिम लोगों से बच आए** (क्योंकि उस जगह पर फ़िरऔन की हुकूमत नहीं थी)(25) **एक लड़की ने कहा अब्बा जान** (आप को आदमी की ज़रूरत है और हम बड़ी हो गईं अब घर में रहना ही ठीक है तो) **आप इन को नौकर रख लीजिए क्योंकि अच्छा नौकर वो आदमी है जो ताक़तवर** (हो और) **अमानतदार** (भी) **हो** (और इनमें दोनों ख़ूबियां हैं जैसा कि ताक़त का उनका पानी खींचने से और अमानत का उनके बरताव से पता चला ख़ासकर रास्ते में औरत को पीछे कर देना)(26) **वो** (बुज़ुर्ग मूसा अलैहिस्सलाम से) **कहने लगे मैं चाहता हूं कि इन दो लड़कियों में से एक का तुम्हारे साथ निकाह कर दूं इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी नौकरी करो** (मतलब यह कि आठ साल की ख़िदमत निकाह का महर है), **फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से** (अहसान) **है** (यानी मेरी तरफ़ से ज़बरदस्ती नहीं) **और मैं** (इस मुआमले में) **तुम पर कोई तकलीफ़ डालना नहीं चाहता** (यानी काम लेने और वक़्त की पाबनदी में आसानी बरतूंगा, और) **तुम मुझ को इन्शाअल्लाह तआ़ला भलाई करने वाला पाओगे**(27) **मूसा** (अलैहिस्सलाम राज़ी हो गये और) **कहने लगे कि** (बस तो) **यह बात मेरे और आप के बीच** (पक्की) **हो चुकी, मैं इन दोनो मुद्दतों में से जिस** (मुद्दत) **को भी पूरा करदूं मुझ पर कोई ज़बरदस्ती न होगी और हम जो** (मुआमले) **की बात चीत कर रहे हैं अल्लाह उसका गवाह** (काफ़ी) **है** (उसको हाज़िर नाज़िर समझ कर वादा पूरा करना चाहिए)(28)।

नोटः- यहां यह मालूम हुआ कि लड़कियों के वली को चाहिए कि कोई नेक मर्द मिले तो इस का इन्तिज़ार न करे कि उसी की तरफ़ से निकाह की बात शुरू हो बल्कि ख़ुद भी पेश कर देना पैग़म्बर की सुन्नत है।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ
اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَیْمَنِ فِی

الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَۙ ﴿۳۰﴾ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ
كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَ لَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِیْ
جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّ اضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۳۳﴾ وَ اَخِیْ
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِیْۤ ۫ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَاۤ ۚۛ اَنْتُمَا وَ مَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 29 से 35

बस जब मूसा (अलैहिस्सलाम) **उस मुद्दत को पूरा कर चुके** (और शुऐब अलैहिस्सलाम की इजाज़त से) **अपनी बीवी को लेकर** (मिस्र या शाम की तरफ़) **रवाना हुए तो** (एक रात में ऐसा हुआ कि सर्दी भी थी और रास्ता भी भूल गये उस वक़्त) **उन को तूर पहाड़ की तरफ़ एक आग** (रौशनी की सूरत में) **दिखाई दी, उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि तुम** (यहां ही) **ठहरे रहो मैंने एक आग देखी है** (मैं वहां जाता हूं) **शायद मैं तुम्हारे पास वहां से** (रास्ते की) **कुछ ख़बर लाऊं या कोई आग का** (दहकता हुआ) **अंगारा ले आऊं ताकि तुम सेंक लो(29) तो वो जब उस आग के पास पहुंचे तो उन को उस मैदान के दाहिनी तरफ़ से उस मुबारक जगह में एक पेड़ से आवाज़ आई ऐ मूसा मैं अल्लाह हूं सारे जहानों का रब(30) और यह** (भी आवाज़ आई) **कि तुम अपना असा** (यानी लाठी नीचे) **डाल दो, बस** (उन्होंने डाल दिया और वो सांप बनकर चलने लगा तो) **उन्होंने जब उस को** (ऐसा) **लहराता हुआ देखा जैसा सांप हो तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड कर भी न देखा,** (उन से कहा गया कि) **ऐ मूसा आगे आओ डरो मत तुम** (हर तरह) **अमन में हो(31)** (और यह कोई डर की बात नहीं बल्कि तुम्हारा मोजिज़ा है और दूसरा मोजिज़ा यह दिया जाता है कि) **तुम अपना हाथ गरीबान के अन्दर डालो** (और फिर निकालो) **वो बिना किसी बीमारी के बहुत चमकदार होकर निकलेगा और डर** (दूर करने) **के वास्ते अपना** (वो) **हाथ** (फिर) **अपने** (गरीबान और बग़ल) **से** (पहले की तरह) **मिला लेना** (ताकि वो फिर असली हालत पर हो जाए) **सो यह** (तुम्हारी पैग़म्बरी की) **दो सनदें** (और दलीलें) **हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास जाने के वास्ते** (जिसका तुम को हुक्म किया जाता है, क्योंकि) **वो बड़े नाफ़रमान लोग हैं(32) उन्होंने कहा कि या रब मेरे** (मैं

जाने के लिए हाज़िर हूं मगर आप की ख़ास मदद की ज़रूरत है क्योंकि) **मैंने उन में से एक आदमी का ख़ून कर दिया था सो मुझ को ख़तरा है कि** (कहीं पहले ही) **वो लोग मुझ को क़त्ल कर दें** (कि आप का हुक्म भी न पहुंचा सकूं)(33) **और** (दूसरी बात यह है कि मेरी ज़बान भी ज़्यादा साफ़ और रवां नहीं है और) **मेरे भाई हारून की ज़बान मुझ से ज़्यादा साफ़ है तो उन को भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ पैग़म्बरी दे दीजिए कि** (वो मेरी बात की हिमायत और) **तस्दीक़** (पूरी तरह) **करेंगे** (क्योंकि) **मुझ को डर है कि वो लोग** (फ़िरऔन और उसके दरबारी) **मुझ को झुटलाएंगे** (तो उस वक़्त बहस करने के लिए ऐसे आदमी की ज़रूरत होती है जिस की ज़बान रवां होती है)(34) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि** (बेहतर है) **हम अभी तुम्हारे हाथ मज़बूत किये देते हैं और हम तुम दोनो को ऐसा** (रौब और) **दबदबा देते हैं जिससे उन लोगों की तुम तक पहुंच न होगी** (बस) **हमारे मोजिज़े लेकर जाओ तुम दोनो और जो तुम्हारे साथी होंगे** (उन लोगों पर) **हावी** (और कामयाब) **रहेंगे**(35)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि वाज़ो नसीहत में बात को साफ़ और अच्छे तरीक़े से बयान करना भी पसन्दीदा है जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून की तारीफ़ में फ़रमाया।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٦ وَ
قَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٧ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ
فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَ اِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٨ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ جُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝٣٩ فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝٤١ وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝٤٢

आयत नं० 36 से 42

बस जब उन लोगों के पास मूसा (अलैहिस्सलाम) **हमारी खुली निशानियां लेकर पहुंचे तो**

उन लोगों ने (मोजिज़े देख कर) **कहा कि यह तो सिर्फ़ एक जादू है कि** (यूं ही अल्लाह तआ़ला पर) **बात घड़ली है** (कि ये उसकी तरफ़ से पैग़म्बरी की दलील हैं) **और हम ने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे बाप दादों के वक़्त में पहले हुई हो(36) और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (इसके जवाब में) **कहा कि मेरा रब उस आदमी को अच्छी तरह जानता है जो सही दीन उसके पास से लेकर आया है और जिस का अन्जाम** (यानी ख़ातमा) **इस दुनिया से अच्छा होने वाला है,** (और) **बेशक ज़ालिम लोग** (जो कि हिदायत और सही दीन पर न हों) **कभी कामयाब न होंगे** (क्योंकि उनका अन्जाम अच्छा न होगा)(37) **और** (मूसा अलैहिस्सलाम की दलीलें देख कर और सुन कर) **फ़िरऔन** (को ख़तरा हुआ कि कहीं हमारे मानने वाले इनकी तरफ़ न झुक जाएं तो लोगों को जमा करके) **कहने लगा ऐ दरबार वालो मुझ को तो तुम्हारा अपने सिवा कोई ख़ुदा मालूम नहीं होता** (फिर बात बनाकर अपने वज़ीर से कहा कि) **ऐ हामान तुम हमारे लिए मिट्टी** (की ईंटें) **आग में पकवा कर** (उनसे) **मेरे वास्ते एक ऊंची इमारत बनवाओ ताकि** (मैं उस पर चढ़ कर) **मूसा के अल्लाह को देखूं और मैं तो** (इस दावे में कि कोई और ख़ुदा है) **मूसा को झूटा ही समझता हूं(38) और फ़िरऔन और उसके साथियों ने नाहक़ दुनिया में सर उठा रक्खा था और यह समझ रहे थे कि उन को हमारे पास लौट कर आना नहीं है(39) तो हम ने** (इस घमन्ड की सज़ा में) **उस को और उसके साथियों को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया** (यानी डुबा दिया)**, तो देखिये ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ(40) और हमने उन लोगों को ऐसा सरदार बनाया था जो** (लोगों को) **दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते** (यानी कुफ़्र के काम करने को कहते) **रहे और** (इसी लिए) **क़ियामत के दिन** (ऐसे मजबूर रह जाएंगे कि) **उन का कोई साथ न देगा(41) और** (ये लोग दोनो जहान में घाटे में रहे बस) **दुनिया में भी हमने उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन भी बदहाल लोगों में से होंगे**(42)

नोटः- हामान ने फ़िरऔन के हुक्म पर इतना ऊंचा महल तैयार कराया कि उस ज़माने में उससे ऊंची कोई इमारत न थी जिसमें पचास हज़ार मिस्त्री काम कर रहे थे जब वह तैयारी पूरी हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया उन्होंने एक चोट में इस महल के तीन टुकड़े करके गिरा दिया जिसमें फ़िरऔनी फ़ौज के हज़ारों आदमी दब कर मर गये।

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآىِٕرَ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۳﴾ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِیِّ اِذْ قَضَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَ مَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۴۴﴾ وَ لٰكِنَّاۤ
اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَیْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَ مَا كُنْتَ ثَاوِیًا فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ تَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِنَا ۙ وَ لٰكِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِیْنَ ﴿۴۵﴾ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَیْنَا وَ لٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِیْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ تُصِیْبَهُمْ مُّصِیْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ فَیَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ
اَرْسَلْتَ اِلَیْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰیٰتِكَ وَ نَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۴۷﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْ لَاۤ
اُوْتِیَ مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى ؕ اَوَ لَمْ یَكْفُرُوْا بِمَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَ قَالُوْۤا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَاۤ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ لَّمْ
یَسْتَجِیْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَیْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۰﴾ وَ لَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾

आयत नं० 43 से 51

और (लोगों के सुधार के लिए पैग़म्बरी का यह सिलसिला सदा से चला आया है जैसा कि) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (जिन का क़िस्सा अभी पढ़ चुके हो) **पहली उम्मतों** (यानी क़ौमे नूह व आद व समूद) **के हलाक होने के बाद** (जब कि लोग हिदायत के सख़्त ज़रूरत मन्द थे) **किताब** (तौरेत) **दी थी जो** (उन) **लोगों** (यानी बनी इस्राईल) **के लिए सीख और हिदायत और रहमत थी ताकि वो** (उससे) **नसीहत पाएं(43) और** (फिर हम ने आप को पैग़म्बर बनाया जिस के सबूतों में एक मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से की ख़बर देना है कि) **आप** (तूर के) **पच्छम** (किनारे) **की तरफ़ मौजूद न थे जब कि हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिये थे** (यानी तौरेत दी थी) **और** (वहां मौजूद तो क्या होते) **आप** (तो) **उन लोगों में से** (भी) **न थे जो** (उस ज़माने में) **मौजूद थे** (बस ये बातें आप को वही से मालूम हुईं)**(44) बल्कि** (बात यह है कि) **हम ने** (मूसा अलैहिस्सलाम के बाद) **बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बड़ा ज़माना बीत गया** (और वो नसीहतें लोग भुला बैठे और फिर हिदायत की ज़रूरत हुई)**, और आप मदयन वालों में भी मौजूद न थे कि आप** (वहां के हालात देख कर उनके बारे में) **हमारी आयतें** (अपने ज़माने के) **इन लोगों को पढ़-पढ़ कर सुना रहे हों बल्कि हम ही** (आप को) **रसूल बनाने वाले हैं** (कि रसूल बनाकर ये

क़िस्से वही से बता दिये)(45) **और** (इसी तरह) **आप तूर के किनारे पर उस वक़्त भी मौजूद न थे जब हमने** (मूसा अलैहिस्सलाम को पैग़म्बरी देने के वक़्त) **पुकारा था बल्कि** (इस का पता भी इस तरह चला कि) **आप अपने रब की रहमत से नबी बनाए गये ताकि आप ऐसे लोगों को डराएं जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला** (नबी) **नहीं आया शायद वो नसीहत मान लें**(46) **और** (हम रसूल न भी भेजते) **अगर यह बात न होती कि उन पर उनके** (बुरे) **कामों की वजह से कोई मुसीबत** (दुनिया या आख़रत में) **आती तो यह कहने लगते कि या रब हमारे आप ने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों नहीं भेजा ताकि हम आप के हुक्मों पर चलते और** (उन हुक्मों और रसूल पर) **ईमान लाने वालों में से होते**(47) **बस** (चाहिए तो यह था कि रसूल के आने को ग़नीमत समझते और ईमान लाते लेकिन उन की यह हालत हुई कि) **जब हमारी तरफ़ से उन लोगों के पास सच्चा दीन पहुंचा तो** (उसमें शुबह निकालने के लिए यह) **कहने लगे कि इन को ऐसी किताब क्यों न मिली जैसी मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को मिली थी** (यानी क़ुरआन तौरेत की तरह एक बार क्यों न उतरा, आगे जवाब है कि) **जो किताब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को मिली थी इससे पहले क्या उस का इनकार नहीं किया** (जैसा कि मुशरिक मूसा अलैहिस्सलाम और तौरेत को भी न मानते थे) **ये लोग तो** (क़ुरआन और तौरेत दोनो के बारे में) **यह कहते हैं कि दोनो जादू हैं जो एक दूसरे के मुवाफ़िक़ हैं और यह भी कहते हैं कि हम तो दोनो में से किसी को नहीं मानते**(48) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप कह दीजिए कि अच्छा तो** (तौरेत और क़ुरआन के सिवा) **तुम कोई और किताब अल्लाह के पास से ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनो से बेहतर हो मैं उसी पर चलने लगूंगा अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो**(49) **फिर** (भी) **अगर ये लोग आप का** (यह) **कहना न कर सकें** (और कर भी नहीं सकते और आप की बात भी न मानें) **तो आप समझ लीजिए कि ये लोग अपनी मनमर्ज़ी** (और नफ़्स के कहने) **पर चलते हैं, और ऐसे आदमी से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो** (अपनी) **मनमर्ज़ी पर चलता हो बिना इसके कि अल्लाह की तरफ़ से कोई दलील** (उसके पास) **हो,** (और) **अललाह तआ़ला ऐसे ज़ालिम लोगों को** (जो हक़ जानने के बाद भी गुमराही से बाज़ न आएं) **हिदायत नहीं किया करता** (जिसकी वजह ख़ुद उन का गुमराह रहने का इरादा है)(50) **और हम ने इस कलाम** (यानी क़ुरआन) **को इन लोगों के लिए थोड़ा-थोड़ा भेजा ताकि ये लोग** (बार-बार ताज़ा सुनने से) **नसीहत मानें** (यानी हम तो एक बार भेजने की क़ुदरत भी रखते हैं मगर उन्हीं के फ़ाइदे के लिए थोड़ा-थोड़ा भेजते हैं फिर भी अन्धेर है कि अपनी ही भलाई की मुख़ालफ़त करते हैं)(51)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि तबलीग़ का अहम पहलू यह भी था कि वो हक़ बात को लगातार कहते रहते और पहुंचाते रहते थे। लोगों का इनकार व झुटलाना उनके अपने काम और अपनी लगन में कोई रूकावट पैदा नहीं करता था। बल्कि अगर हक़ बात को एक बार न माना गया तो दूसरी बार वो भी न माना गया तो तीसरी चौथी बार। बार-बार पेश करते ही रहते। अपनी कोशिश बराबर जारी रहती। आज भी दावत व तबलीग़ के काम करने वालों को इस से सबक़ लेना चाहिए।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ
اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ مِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ اِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؗ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ؗ
لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 52 से 56

(और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी उन ख़बरों से भी साबित है जिन की उन आलिमों ने तस्दीक़ की है जिन को तौरेत व इन्जील की उन ख़बरों का इल्म है जैसा कि) **जिन लोगों को हम ने कुरआन से पहले** (आसमानी) **किताबें दी हैं** (उनमें जो इन्साफ़ वाले हैं) **वो इस** (कुरआन) **पर ईमान लाते हैं(52) और जब कुरआन उन के सामने पढ़ा जाता है तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए बेशक यह हक़ है** (जो) **हमारे रब की तरफ़ से** (उतरा है और) **हम तो इस** (के आने) **से पहले भी** (अपनी किताबों की ख़ुशख़बरी की वजह से इसे) **मानते थे** (और उन लोगों की तरह नहीं जो इसके आने से पहले तो इसकी तस्दीक़ और इन्तिज़ार करते थे मगर जब कुरआन आया तो इस का इनकार करने लगे)(53) **ऐसे लोगों को उनकी** (ईमान पर) **मज़बूती की वजह से दोहरा सवाब मिलेगा** (क्योंकि वो पहली किताब पर ईमान रखने के साथ भी इस पर ईमान रखते थे और इसके आजाने के बाद भी इस पर जमे रहे) **और वो लोग नेकी** (और सहार) **से बुराई** (और तकलीफ़) **को दूर करते हैं और हम ने जो कुछ उन को दिया है उस में से** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च करते हैं(54) और जब किसी से** (अपने बारे में) **कोई बेहूदा बात सुनते हैं** (जो ज़बानी तकलीफ़ है) **तो उस को** (भी) **टाल जाते हैं और कह देते हैं कि** (हम कुछ

जवाब नहीं देते) **हमारा किया हमारे सामने आएगा और तुम्हारा किया तुम्हारे सामने,** (भाई) **हम तो तुम को सलाम करते हैं** (हम को झगड़े से मुआफ़ रक्खो) **हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते**(55) (ऐ पैग़म्बर) **आप जिसको चाहें सही रास्ते पर नहीं ला सकते बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है सही रास्ते पर पहुंचा देता है, और** (सही राह पर लाने की क़ुदरत तो किसी को क्या होती अल्लाह के सिवा किसी को इसका पता तक भी नहीं कि कौन सही राह पाने वाला है, बल्कि) **सही राह पहुंचने वालों को वो ही जानता है**(56)

नोटः- हदीस की किताब मुस्लिम शरीफ़ में है कि ऊपर वाली यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबुतालिब के बारे में उतरी है कि आप की बड़ी तमन्ना यह थी कि वो किसी तरह ईमान ले आएं इस पर हुज़ूर को यह बता दिया गया कि किसी को मोमिन बना देना आप के बस में नहीं।

तफ़सीर रूहुल मआनी में है कि अबुतालिब के ईमान व कुफ़्र के बारे में बेज़रूरत बात और बहस करने और उन को बुरा कहने से बचना चाहिए कि इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल को ठेस पहुंचने का डर है।

وَ قَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَ لَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ
شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ
مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَ كُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى
يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَ مَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَ اَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ مَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ
شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتُهَا ۚ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع

आयत नं० 57 से 60

और (काफ़िर लोग ईमान न लाने के बारे में जो बातें बनाते हैं उन में एक यह कि) **ये लोग कहते हैं कि अगर आप के साथ होकर** (इस दीन की) **राह पर चलने लगें तो हम अपनी ज़मीन से मार कर निकाल दिये जाएं** (कि घर बार भी छूटे और रोज़गार की परीशानी अलग हो, तो) **क्या हम ने उन को अमन वाले** (घर यानी) **हरम में जगह नहीं दी जहां हर क़िस्म के**

फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से (यानी हमारी क़ुदरत और महरबानी से) **खाने को मिलते हैं लेकिन उनमें अक्सर लोग** (इसको) **नहीं जानते** (यानी इसका शुक्र अदा नहीं करते)(57) **और** (एक वजह उन के ईमान न लाने की यह है कि ये अपनी ऐश पर इतराते हैं लेकिन यह भी बेवक़ूफ़ी है क्योंकि) **हम बहुत सी ऐसी बस्तियां बर्बाद कर चुके हैं जो अपने ऐश के सामान पर इतराते थे, सो** (देख लो) **ये उनके घर** (तुम्हारी आंखों के सामने पड़े) **हैं कि उनके बाद आबाद ही न हुए मगर थोड़ी देर के लिए** (कि कोई मुसाफ़िर राहगीर उधर से गुज़रते हुए थोड़ी देर सस्ताने को या तमाशा देखने को बैठ जाए)**, और आख़िर कार** (उनके उन सब सामानों के) **हम ही मालिक रहे** (कोई नाम को भी वारिस न हुआ)(58) **और** (एक शुबह उन को यह होता है कि अगर वो लोग कुफ़्र की वजह से हलाक किये गये तो हम मुद्दत से कुफ़्र करते आ रहे हैं हम को क्यों न हलाक किया तो उस का जवाब यह है कि) **आप का रब बस्तियों को** (पहली ही बार में) **हलाक नहीं किया करता जब तक कि उन की बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए, और** (पैग़म्बरों को भेजने के बाद भी फ़ौरन) **हम उन बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर उसी हालत में कि वहां के रहने वाले बहुत ही शरारत करने लगें** (यानी बार-बार समझाने पर भी बाज़ न आएं)(59) **और** (एक वजह ईमान न लाने की यह है कि दुनिया को नक़्द समझते हैं इसलिए इस पर दिलचस्पी है और आख़रत को उधार समझते हैं तो उससे दिलचस्पी नहीं तो जान लो कि) **जो कुछ तुम को दिया गया है वो सिर्फ़** (कुछ दिनों की) **दुनिया की ज़िन्दगी के बरतने के लिए है यहीं की बहार है** (कि उम्र के ख़ातमे के साथ उस का भी ख़ातमा हो जाएगा) **और जो** (बदला व सवाब) **अल्लाह के यहां है वो इस से कहीं ज़्यादा बेहतर और** (सदा) **बाक़ी रहने वाला है, तो क्या तुम लोग** (इस बात को) **नहीं समझते**(60)

नोटः- इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि अगर कोई आदमी अपने माल व जायदाद के बारे में यह वसीयत कर जाए कि मेरा माल उस आदमी को दिया जाए जो सबसे ज़्यादा अक़्लमन्द हो तो उस माल के शरई हक़दार वो लोग होंगे जो अल्लाह की इबादत व ताबेदारी में लगे हों। क्योंकि अक़्ल का तक़ाज़ा ये ही है। और दुनियादारों में सबसे ज़्यादा अक़्ल वाला वो ही है जो दुनिया के धन्दों में ज़्यादा न खप जाए बल्कि आख़रत की फ़िक्र में लगे। ये ही मसअला किताब "दुर्रे मुख़्तार" में भी है।

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ
الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۫ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَ قِيْلَ
ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَ رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَ يَوْمَ
يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ
تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

आयत नं० 61 से 67

भला वो आदमी (यानी मोमिन) **जिस से हम ने एक अच्छा वादा कर रक्खा है फिर वो आदमी उस** (वादे की चीज़ यानी जन्नत) **को पाने वाला है क्या उस आदमी जैसा हो सकता है जिसको हम ने दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ाइदा दे रक्खा है** (यानी काफ़िर) **फिर वो क़ियामत के दिन उन लोगों में होगा जो गरिफ़्तार करके लाए जाएंगे(61) और** (वो दिन याद करो) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला इन काफ़िरों को पुकार कर कहेगा कि कहां हैं** (ख़ुदाई में) **मेरे वो साझी जिन को तुम** (हमारा साझी) **समझ रहे** (थे मुराद इससे शैतान हैं कि उन्हीं की ताबेदारी से शिर्क करते) **थे(62)** (ये सुन कर शैतान) **जिन पर** (लोगों को गुमराह करने की वजह से) **अल्लाह** (के अज़ाब) **का हुक्म हो चुका होगा वो बोल उठेंगे या रब हमारे बेशक ये वो ही लोग हैं जिन को हम ने बहकाया** (तो ज़रूर लेकिन) **हम ने उन को वैसा ही** (बिना ज़ोर ज़बरदस्ती) **बहकाया जैसा हम ख़ुद** (बिना ज़ोर ज़बरदस्ती) **बहके थे** (यानी जिस तरह हम अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए किसी ने हमें मजबूर नहीं किया इसी तरह हमने इनको मजबूर नहीं किया इन्होंने अपनी मर्ज़ी से बात मानी मतलब यह कि हम भी मुजरिम हैं मगर ये भी बरी नहीं), **हम आप के सामने इनसे ताल्लुक़ का इनकार करते हैं,** (और) **ये लोग** (असलीयत में) **हम को** (ही) **न पूजते थे** (यानी जिन के भरोसे बैठे हैं वो क़ियामत के दिन उन से अलग हो जाएंगे)**(63) और** (जब वो इस तरह मुंह फेर लेंगे तो उस वक़्त इन मुशरिकों से) **कहा जाएगा कि** (अब) **अपने उन ख़ुदाओं को बुलाओ** (जिन को अल्लाह का साझी बना रक्खा था) **बस वो** (बेचैन होकर) **उन को पुकारेंगे तो वो जवाब भी न देंगे और** (उस वक़्त) **ये लोग** (अपनी आंखों से) **अज़ाब को देख लेंगे, ऐ काश ये लोग दुनिया में सीधे रास्ते पर होते** (तो यह मुसीबत न देखते)**(64) और जिस दिन** (अल्लाह) **इन काफ़िरों से पुकार कर**

पूछेगा कि तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था(65) सो उस दिन उन (के दिमाग़) **से सारी बातें गुम हो जाएंगी तो वो** (ख़ुद भी न समझ सकेंगे और) **आपस में** (एक दूसरे से) **कुछ पूछ भी न सकेंगे(66) लेकिन जो आदमी** (कुफ़्र व शिर्क से दुनिया में) **तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग उम्मीद है कि** (आख़िरत में) **कामयाब होने वालों में से होंगे** (और मुसीबत से बचे रहेंगे)(67)

नोटः- यहां मालूम हो गया कि जिस आदमी के सामने हक़ की साफ़ दलीलें मौजूद हों और वो हक़ की तरफ़ दावत देने वालों के बजाए गुमराह करने वालों की बात मान कर गुमराही में पड़ जाए तो ये कोई मजबूरी नहीं।

وَ رَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَ يَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٨ وَ رَبُّكَ يَعْلَمُ
مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ۝٦٩ وَ هُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ ۫ وَ لَهُ الْحُكْمُ وَ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٧٠ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ
بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ۝٧١ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ
اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٧٢ وَ مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٣ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝٧٤
وَ نَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٧٥ ع

आयत नं० 68 से 75

और आप का रब (ऐसा निराली ख़ूबियों वाला है कि) **जिस चीज़ को चाहता है पैदा करता है और जिस** (हुक्म) **को चाहता है पसन्द करता** (है और पैग़म्बरों के वास्ते से भेजता) **है, इन लोगों के बस में कुछ नहीं है,** (बस साबित हुआ कि) **अल्लाह तआला उन के शिर्क से पाक और बहुत ऊपर** (है बस जब वो ऐसा है तो इबादत का हक़दार भी वो ही अकेला) **है(68) और आप का रब** (ऐसा इल्म वाला है कि वो) **सब बातों को जानता है जो उनके दिलों में छुपी हैं और जो ये ऐलानिया करते हैं** (और किसी का ऐसा इल्म नहीं)(69) **अल्लाह वो ही है उस के**

सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, तारीफ़ उसी की है दुनिया में भी और आख़रत में भी, और हुकूमत भी (क़ियामत में) उसी की होगी और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे (यह नहीं कि बच जाओ या और कहीं जाकर पनाह लेलो)(70) आप (इन लोगों से) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर सदा के लिए क़ियामत तक रात ही रहने दे तो अल्लाह के सिवा वो कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रौशनी को ले आए, तो क्या तुम (तौहीद की ऐसी साफ़ दलीलों को) सुनते नहीं(71) आप (इन से यह भी) कहिए कि भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर सदा के लिए क़ियामत तक दिन ही रहने दे तो अल्लाह के सिवा वो कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम आराम पाओ, क्या तुम (उस की कुदरत को) देखते नहीं (ऐसी क़ुदरत वाला ही माबूद होना चाहिए)(72) और (वो ऐसा नेमतें देने वाला है कि) उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और ताकि दिन में उस की रोज़ी तलाश करो और ताकि (इन दोनो नेमतों पर) तुम (अल्लाह का) शुक्र करो(73) और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन को पुकार कर कहेगा (ताकि सब लोग उन की रूसवाई सुन लें) कि जिन को तुम मेरा साझी समझते थे वो कहां गये(74) और (सबूत पूरे करने के लिए) हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह (भी) निकाल कर लाएंगे (मुराद उससे पैग़म्बर हैं जो उन के कुफ़्र की गवाही देंगे) फिर हम (इन मुशरिकों से) कहेंगे कि (अब) अपनी कोई दलील (शिर्क के दावे के सही होने पर) पेश करो तो (उस वक़्त) उन को पता चल जाएगा कि सच्ची बात अल्लाह की थी (जो पैग़म्बरों के वास्ते से बताई गई थी और शिर्क का दावा झूटा था) और (दुनिया में) जो कुछ बातें घड़ा करते थे (आज) किसी का पता न रहेगा (क्योंकि हक़ के आने पर झूट ग़ाइब हो जाता है)(75)

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي
الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝٧٦ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا
تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُفْسِدِينَ ۝٧٧ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ
مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝٧٨ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ
قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝٧٩ وَقَالَ الَّذِينَ

أُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَ لَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝٨٠ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَ
بِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝٨١ وَ اَصْبَحَ
الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ ۚ لَوْ لَآ
اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٢

आयत नं० 76 से 82

क़ारून (का हाल देख लो कि कुफ़्र व नाफ़रमानी से उस को क्या नुक़सान पहुंचा और उस का मालो दोलत कुछ काम न आया, उस का क़िस्सा यह है कि वो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की बिरादरी** (यानी बनी इस्राईल) **में से था तो वो** (बहुत ज़्यादा माल होने की वजह से) **उन लोगों के मुक़ाबिले में घमन्ड करने लगा, और** (माल उस के पास इतना ज़्यादा था कि) **हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उनकी चाबियां कई-कई ताक़तवर लोगों को उठानी भारी थी** (यानी उनसे मुश्किल से उठती थी तो जब चाबियां इतनी ज़्यादा थी तो ख़ज़ाने तो फिर बहुत ही होंगे और) **जब उस को उसकी बिरादरी ने** (समझाने के लिए) **कहा कि तुम** (इस मालो दोलत पर) **मत इतराओ बेशक अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता(76) और** (यह भी कहा कि) **तुम को अल्लाह ने जितना दे रक्खा है उसमें आख़रत का घर बनाने की कोशिश किया करो और दुनिया से अपना हिस्सा** (आख़रत में ले जाना) **न भूलो और जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे साथ अहसान किया है तुम भी** (बन्दों के साथ) **अहसान किया करो और** (अल्लाह की नाफ़रमानी करके) **दुनिया में फ़साद मत फैलाओ** (यानी गुनाह करने से दुनिया में फ़साद होता है), **बेशक अल्लाह तआ़ला फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता(77) क़ारून** (यह सुनकर) **कहने लगा कि मुझको यह सब कुछ मेरी हुनर मन्दी से मिला** (है यानी मैंने यह माल अपने हुनर से जमा किया है इसमें न किसी का अहसान और न हक़) **है,** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **क्या उस** (क़ारून) **ने यह न जाना कि अल्लाह तआ़ला उससे पहले उम्मतों में से ऐसों-ऐसों को हलाक कर चुका है जो ताक़त** (और दौलत) **में भी उससे कहीं ज़्यादा थे और मजमा** (भी उससे) **उनका ज़्यादा था, और** (आख़रत में सज़ा के वक़्त) **मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में पूछा भी न जाएगा** (क्योंकि अल्लाह को सब मालूम है)(78) **फिर** (एक बार ऐसा हुआ कि) **वो अपनी क़ौम के सामने अपनी शान** (और ठाट बाट) **से निकला, जो लोग** (उसकी बिरादरी में) **दुनिया के**

चाहने वाले थे (चाहे मोमिन ही हों, वो लोग) **कहने लगे कि अच्छा होता कि हम को भी वो सामान मिला होता जैसा क़ारून को मिला है सचमुच वो बड़ा नसीब वाला है(79) और जो लोग** (इल्म और दीन की) **समझ रखते थे वो** (उन हिर्स और लालच करने वालों से) **कहने लगे तुम पर अफ़सोस है** (तुम इस दुनिया पर क्या नज़र करते हो) **अल्लाह तआ़ला के घर का सवाब** (इस दुनिया के साज़ो सामान से) **हज़ार दर्जा बेहतर है जो ऐसे आदमी को मिलता है कि ईमान लाए और नेक काम करे और** (फिर मोमिनों और नेकों में से भी) **वो** (सवाब पूरा) **उन ही लोगों को दिया जाता है जो** (दुनिया की हिर्स व लालच से) **सब्र करने वाले हैं(80) फिर हम ने उस** (क़ारून) **को और उसके महल को** (उसकी शरारत बढ़ जाने से) **ज़मीन में धंसा दिया, सो कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो उसको अल्लाह** (के अज़ाब) **से बचा लेता** (भले ही वो बड़े मजमे वाला था), **और न वो ख़ुद ही अपने को बचा सका(81) और कल** (यानी कुछ दिनों पहले) **जो लोग उस जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वो** (आज उसके अन्जाम को देख कर) **कहने लगे बस पता चल गया कि** (ख़ुशहाली और ग़रीबी का मदार ख़ुशनसीबी या बद नसीबी पर नहीं बल्कि) **अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी दे देता है और** (जिस को चाहे) **कमी से देने लगता है** (यह हमारी ग़लती थी कि इसको ख़ुशनसीबी समझते थे हमारी तौबा है और सचमुच) **अगर हम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी न होती तो हम को भी धंसा देता** (क्योंकि हिर्स और दुनिया के लालच का गुनाह हमने भी किया), **बस पता चल गया कि काफ़िर लोग कामयाब नहीं होते** (चाहे कुछ दिन मज़े लूट लें मगर अन्जाम घाटा है बस कामयाबी ईमान वालों के लिए ही है)(82)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि दुनिया के साज़ो सामान पर नज़र करना इल्म वालों का काम नहीं उन की नज़र हमेशा आख़रत के सदा के फ़ाइदे पर रहती है दुनिया के सामान को ज़रूरत भर हासिल करते हैं उसी को काफ़ी समझते हैं।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٨٣ مَنْ جَآءَ
بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨٤

आयत नं० 83 से 84

यह आख़रत वाला घर (जिस के सवाब का ऊपर बयान हुआ) **हम उन्हीं लोगों को देंगे जो दुनिया में बड़ा बनना नहीं चाहते और न फ़साद करना** (यानी न घमन्ड करते हैं और न कोई ऐसा गुनाह करते हैं जिससे ज़मीन में फ़साद हो), **और नेक अन्जाम परहेज़गार लोगों को मिलता है** (जो बुराइयों से बचने के साथ नेक कामों के भी पाबन्द हों)(83) **जो आदमी** (क़ियामत के दिन) **नेकी लेकर आएगा उस को उस** (के हक़्) **से बेहतर** (बदला) **मिलेगा** (यानी उस के नेक काम से ज़्यादा सवाब मिलेगा जो कम से कम दस गुना ज़्यादा है) **और जो आदमी बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोगों को जो बुराई का काम करते हैं उतना ही बदला मिलेगा जितना वो करते थे** (यानी बुराई से ज़्यादा सज़ा न होगी)(84)

नोटः- तकब्बुर और घमन्ड जिसका हराम होना इस आयत में बताया गया है वो है कि लोगों पर बड़ाई जिताए और उनको गिरा हुआ समझे वर्ना अपने लिए अच्छा लिबास, अच्छा खाना, अच्छे मकान का इन्तिज़ाम जब वो दूसरों पर बड़ाई जितनाने के लिए न हो बुरा नहीं।

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی وَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ
مُّبِیْنٍ ﴿۸۵﴾ وَ مَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ یُّلْقٰۤی اِلَیْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۶﴾ وَ لَا
یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ وَ ادْعُ اِلٰی رَبِّكَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۸۷﴾ وَ لَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾

आयत नं० 85 से 88

(और ऐ पैग़म्बर आप के दुशमनों ने जो आप को वतन छोड़ने पर मजबूर किया है जिस का आप को दुख है तो आप तसल्ली रक्खें) **जिस अल्लाह ने आप पर कुरआन** (के हुक्मों को पहुंचाने और उस पर अमल करने) **को फ़र्ज़ किया है** (जो आप की पैग़म्बरी की दलील है) **वो आप को** (आप के) **असली वतन** (यानी मक्का) **में फिर पहुंचा देगा,** (और उस वक़्त हुकूमत भी आप की होगी और ये लोग जो आप को ग़लती पर और अपने को हक़ पर समझते हैं तो) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन सच्चा दीन लेकर** (अल्लाह की तरफ़ से) **आया है और कौन खुली गुमराही में है**(85) **और** (आप की यह पैग़म्बरी सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से है यहां

तक कि ख़ुद) **आप को** (नबी होने से पहले) **यह उम्मीद न थी कि आप पर यह किताब उतारी जाएगी मगर सिर्फ़ आप के रब की महरबानी से यह उतरी तो आप** (इन लोगों की बेहूदा बातों पर ध्यान न कीजिए और जिस तरह अब तक इनसे अलग रहे आगे भी इसी तरह) **इन काफ़िरों की मदद न कीजिए(86) और जब अल्लाह के हुक्म आप पर आचुकें तो ऐसा न होने पाए** (जैसा अब तक भी नहीं होने पाया) **कि ये लोग आप को उन हुक्मों से रोक दें और आप** (इसी तरह) **अपने रब** (के दीन) **की तरफ़** (लोगों को) **बुलाते रहिए और** (जिस तरह अब तक मुशरिकों से कोई वास्ता नहीं रहा इसी तरह आगे भी सदा) **इन मुशरिकों में शामिल न होजिए(87) और** (इसी तरह आगे भी) **अल्लाह के साथ किसी माबूद को न पुकारना** (इन आयतों में काफ़िरों और मुशरिकों को इस बात से नाउम्मीद करना है कि अल्लाह के रसूल कभी भी तुम्हारे दीन से समझौता नहीं कर सकते), **उसके सिवा कोई माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं** (इसलिए कि) **सब चीज़ें फ़ना हो जाने वाली हैं सिवाए उस की ज़ात के** (बस उसके सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं), **और उसी के पास तुम सब को जाना है** (बस सब को उनके किये का बदला मिलेगा)(88)

नोटः- ऊपर आयत में मक्के के फ़तह होने की ख़ुशख़बरी दी गई है इसमें इशारा इस तरफ़ भी है कि कुरआन की तिलावत और उस पर अमल ही अल्लाह की मदद और कामयाबी की वजह होगी।

29-सूरत-अनकबूत

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '69' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ یُّتۡرَکُوۡۤا اَنۡ یَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَ ہُمۡ لَا یُفۡتَنُوۡنَ ﴿۲﴾ وَ لَقَدۡ فَتَنَّا الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ
فَلَیَعۡلَمَنَّ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ صَدَقُوۡا وَ لَیَعۡلَمَنَّ الۡکٰذِبِیۡنَ ﴿۳﴾ اَمۡ حَسِبَ الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ السَّیِّاٰتِ اَنۡ یَّسۡبِقُوۡنَا ؕ سَآءَ
مَا یَحۡکُمُوۡنَ ﴿۴﴾ مَنۡ کَانَ یَرۡجُوۡا لِقَآءَ اللّٰہِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰہِ لَاٰتٍ ؕ وَ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ﴿۵﴾ وَ مَنۡ جَاہَدَ فَاِنَّمَا
یُجَاہِدُ لِنَفۡسِہٖ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَغَنِیٌّ عَنِ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۶﴾ وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُکَفِّرَنَّ عَنۡہُمۡ سَیِّاٰتِہِمۡ وَ
لَنَجۡزِیَنَّہُمۡ اَحۡسَنَ الَّذِیۡ کَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۷﴾

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **क्या उन लोगों ने** (जो काफ़िरों के सताने से घबरा जाते हैं) **यह सोच रक्खा है कि वो इतना कहने में छूट जाएंगे कि हम ईमान ले आए और उनको** (मुसीबतों से) **आज़माया न जाएगा** (यानी ऐसा न होगा बल्कि इस क़िस्म के इम्तिहान भी पेश आएंगे)(02) **और हम तो** (ऐसे ही इम्तिहानों से) **उन लोगों को भी आज़मा चुके हैं जो इनसे पहले** (मुसलमान) **हो चुके हैं** (यानी और उम्मतों के मुसलमानों पर भी ऐसी मुसीबतें आ चुकी हैं) **तो** (इसी तरह इन को भी आज़माया जाएगा और इस इम्तिहान में) **अल्लाह तआ़ला उन लोगों को** (खुले तौर पर) **जान कर रहेगा जो** (ईमान के दावे में) **सच्चे थे और झूटों को भी जान कर रहेगा** (यानी इस इम्तिहान में पता चल जाता है कि कौन सच्चे दिल से ईमान लाया है)(03) **हां क्या जो लोग बुरे-बुरे काम कर रहे हैं** (जैसे मुसलमानों को सताना) **वो यह समझते हैं कि हम से कहीं निकल भागेंगे, उन का यह अन्दाज़ा बहुत बुरा है** (इसमें मुसलमानों को तसल्ली है कि तुम पर किये ज़ुल्मों का बदला लिया जाएगा)(04) **जो आदमी अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता हो सो** (उसको तो ऐसी मुसीबतों से परीशान होना ही न चाहिए क्योंकि) **अल्लाह** (के मिलने) **का वो तय वक़्त ज़रूर ही आने वाला है** (जिससे सारे ग़म दूर हो

जाएंगे), **और वो सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है** (बस तुम्हारी इबादतों और तकलीफ़ों का बदला देकर सब ग़म दूर कर देगा)(05) **और जो आदमी** (अल्लाह की राह में) **मेहनत करता है वो अपने ही** (नफ़े के) **लिए मेहनत करता है,** (वर्ना) **अल्लाह तआ़ला को** (तो) **सारे जहान वालों में किसी की ज़रूरत नहीं(06) और जो लोग ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं हम उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे** (जिसमें कुछ गुनाह जैसे कुफ़्र व शिर्क तो ईमान से मिट जाते हैं और कुछ गुनाह तौबा से और कुछ गुनाह सिर्फ़ नेकियों से और कुछ गुनाह सिर्फ़ महरबानी से मुआफ़ हो जाएंगे और कोई गुनाह कुछ सज़ा के बाद) **और उनको उनके** (उन) **आमाल** (ईमान व नेक काम) **का** (हक़ से) **ज़्यादा अच्छा बदला देंगे**(07)

नोटः- ईमान के दावे में सच्चे और झूटे होने को जान लेने से मुराद यह है कि लोगों में इम्तिहान के बाद उसके सच झूट का पर्दा खुल जाता है वर्ना अल्लाह तआ़ला को तो सब कुछ पहले से मालूम है।

وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ
مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۸ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝۹

आयत नं० 08 से 09

और हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा सलूक करने का हुक्म दिया है, और (इसके साथ यह भी कह दिया है कि) **अगर वो दोनो तुझ पर इस बात का ज़ोर डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिस** (के माबूद होने) **की कोई** (सही) **दलील तेरे पास नहीं है** (और हर चीज़ ऐसी है कि सभी चीज़ों के इबादत के क़ाबिल न होने पर दलीलें मौजूद हैं) **तो** (इस बारे में) **उन का कहना न मानना, तुम सब को मेरे पास लौट कर आना है तो** (उस वक़्त) **मैं तुम को बता दूंगा** (अच्छे या बुरे) **जो काम करते रहे हो(08) और** (तुम में) **जो लोग ईमान लाए होंगे और नेक काम किये होंगे हम उन को नेक बन्दों** (के दर्जे) **में** (जो कि जन्नत है) **दाख़िल करेंगे** (और इसी तरह बुरे कामों पर मुनासिब सज़ा देंगे बस इस तरह जिसने हमारे हुक्मों के मुक़ाबिले मां बाप का कहना माना होगा वो सज़ा पाएगा और जिसने इसके उलट हमारा कहना माना होगा अच्छा बदला पाएगा मतलब यह हुआ कि इस बारे में मां बाप की नाफ़रमानी से गुनाह का खटका न किया जाए)(09)

नोटः- मां बाप के साथ अच्छा सलूक करने के साथ यह भी ज़रूरी है कि उनके हुक्म की ताबेदारी उसी हद तक की जाए कि वो हुक्म अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ न हो।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ
رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
لَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ
مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْئَلُنَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾

आयत नं० 10 से 13

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब उन को अल्लाह की राह में कुछ तकलीफ़ पहुंचाई जाती है तो लोगों के सताने को ऐसा (बड़ा) **समझते हैं जैसे अल्लाह का अज़ाब** (जिससे आदमी बिल्कुल ही मजबूर हो जाए जबकि लोगों में कोई ऐसा अज़ाब नहीं दे सकता)**, और** (अब तो उसका यह हाल है) **अगर** (कभी) **कोई मदद** (मुसलमानों की) **आप के रब की तरफ़ से आ पहुंचती है तो** (उस वक़्त) **कहते हैं कि हम तो** (दीन और अक़ीदे में) **तुम्हारे साथ** (थे यानी मुसलमान ही थे भले ही काफ़िरों की ज़ोर ज़बरदस्ती की वजह से काफ़िरों के साथ हो गये) **थे,** (इस पर अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **क्या अल्लाह तआ़ला को दुनिया जहान वालों के दिलों की बातें मालूम नहीं हैं** (यानी उनके दिल ही में ईमान न था)(10) **और** (ये क़िस्से इसलिए होते रहते हैं कि) **अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम करके रहेगा** (कि तकलीफ़ों पर सब्र करने से मुसलमानों का सच्चा होना खुल जाएगा और मुनाफ़िक़ों का झूटा होना)(11) **और काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि तुम** (दीन में) **हमारी राह चलो और** (क़ियामत में) **तुम्हारे गुनाह** (जो कुफ़्र व जुर्मो से होंगे) **हमारे ज़िम्मे** (और तुम बरी)**, हालांकि ये लोग उनके गुनाहों में से ज़रा भी** (इस तरह कि वो बरी हो जाएं) **नहीं ले सकते, ये बिल्कुल झूट बोल रहे हैं**(12) **और** (यह तो होगा कि) **ये लोग अपने गुनाह का** (पूरा-पूरा) **बोझ उठाएंगे और अपने गुनाहों के साथ कुछ गुनाह** (का बोझ) **और भी** (उठाएंगे और ये गुनाह वो हैं जिन को उन्होंने फैलाया और इन गुनाहों का बोझ उठाने से

असल गुनाहगार बरी नहीं होंगे बस दूसरे तो हल्के न हुए मगर ये लोग उन को गुमराह करने की वजह से और ज़्यादा भारी हो गये) **और ये लोग जैसी जैसी झूटी बातें बनाते थे क़ियामत में उनसे पूछ ज़रूर** (होगी और फिर उस पर सज़ा) **होगी**(13)

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी लोगों को नेक राह की तरफ़ बुलाए तो जितने लोग उसके बुलाने की वजह से नेक राह पर चलेंगे उन सब के कामों का सवाब उस बुलाने वाले के आमाल नामे में भी लिखा जाएगा और उन नेक काम करने वालों के सवाब में कोई कमी न की जाएगी और जो आदमी किसी गुमराही की तरफ़ बुलाए तो जितने लोग उसके कहने से उस गुमराही में पड़ेंगे उन सब का गुनाह और वबाल उस आदमी पर भी पड़ेगा और उन लोगों के वबाल और अज़ाब में भी कोई कमी न होगी। (मुस्लिम शरीफ़)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَ هُمْ
ظٰلِمُوْنَ ۝١٤ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَ جَعَلْنٰهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٥ وَ اِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ
اتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١٦ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝١٧ وَ اِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٨

आयत नं० 14 से 18

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) **को उनकी क़ौम की तरफ़** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा सो वो उनमें पचास साल कम एक हज़ार साल** (रहे और क़ौम को समझाते) **रहे, फिर** (जब इस पर भी वो लोग ईमान न लाए तो) **उनको तूफ़ान ने आ पकड़ा और वो बड़े ज़ालिम लोग थे** (कि इतने लम्बे ज़माने तक भी समझाने से असर न लिया)(14) **फिर** (उस तूफ़ान के आने के बाद) **हम ने उन को** (यानी नूह अलैहिस्सलाम को) **और कश्ती वालों को** (यानी जो उनके साथ सवार थे सब को उस तूफ़ान से) **बचा लिया और हम ने उस क़िस्से को दुनिया जहान वालों के लिए एक सबक़** (और निशानी) **बनाया** (कि सोच कर समझ सकते हैं कि हक़ की मुख़ालफ़त करने वालों का क्या अन्जाम है)(15) **और हम ने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जब कि उन्होंने अनी क़ौम से** (जो कि बुत परस्त थे) **कहा कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो**

(और डर कर शिर्क छोड़ दो), **यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो**(16) (और नासमझी से) **तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर सिर्फ़ बुतों को पूज रहे हो** (जो बिल्कुल मजबूर हैं और किसी काम के नहीं) **और** (उसके बारे में) **झूटी बातें बनाते हो** (कि इनसे हमारा रोज़गार चलता है और यह झूट है क्योंकि) **तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूज रहे हो तुम को कुछ भी रोज़ी देना उनके बस में नहीं सो तुम लोग रोज़ी अल्लाह के पास से तलाश करो** (यानी उससे मांगो रोज़ी का मालिक वो ही है) **और** (जब रोज़ी का मालिक वो ही है तो) **उसी की इबादत करो और** (चूंकि पहली रोज़ी भी उसी की दी हुई है तो) **उसी का शुक्र करो, और तुम सब को उसी की तरफ़ लौट जाना है** (उस वक़्त कुफ़्र पर तुम को सज़ा देगा)(17) **और अगर तुम** (इन बातों में) **मुझको झूटा समझो तो** (याद रक्खो कि मेरा कोई नुक़सान नहीं) **तुम से पहले भी बहुत सी उम्मतें** (अपने पैग़म्बरों को) **झूटा समझ चुकी हैं** (मगर उन पैग़म्बरों का कोई नुक़सान नहीं हुआ), **और** (वजह इसकी यह है कि) **पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (बात का) **साफ़-साफ़ पहुंचा देना है** (मनवाना उस का काम नहीं बस सब पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी हुक्म पहुंचाने के बाद पूरी हो गई, इसी तरह मेरी भी बस हम को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा लेकिन मानना तुम्हारे ज़िम्मे वाजिब था उसके छोड़ने से तुम्हारा नुक़सान हुआ)(18)

नोटः- पैग़म्बरों के सब्र के लिए ये क़िस्से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप की उम्मत की तसल्ली के और उन को दीन के काम पर जमाए रखने के लिए हैं।

اَوَ لَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۱۹﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۰﴾ۚ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۲۲﴾ؑ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِیْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۳﴾

आयत नं० 19 से 23

क्या इन लोगों को मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला किस तरह मख़लूक़ को पहली बार पैदा करता है (नापैद से वजूद में लाता है) **फिर वो ही उसको दोबारा पैदा करेगा, यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान बात** (है बल्कि देखा जाए तो दोबारा पैदा करना पहली बार पैदा करने से

ज़्यादा आसान) **है**(19) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन लोगों से) **कहिए कि तुम लोग मुल्क में चलो फिरो और देखो कि अल्लाह तआ़ला ने मख़लूक़ को किस तरह शुरू में पैदा किया है फिर अल्लाह आख़रत में भी पैदा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ की क़ुदरत रखता है**(20) (और आख़रत में) **जिस को चाहेगा अज़ाब देगा** (यानी जो इस का हक़दार होगा) **और जिस पर चाहे रहमत करेगा** (यानी जो उसके क़ाबिल होगा) **और** (इस अज़ाब देने और रहमत में किसी का दख़ल न होगा) **तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे** (न कि और किसी के पास)(21) **और** (उसके अज़ाब से बचने की कोई सूरत नहीं है) **तुम न ज़मीन में** (छुप कर अल्लाह को) **हरा सकते हो** (कि उसके हाथ न आओ) **और न आसमान में** (उड़ कर) **और न अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई रखवाला है और न कोई मददगार** (बस न अपनी कोशिश से बच सके न दूसरे की हिमायत से)(22) **और जो लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों का और** (ख़ासकर) **उसके सामने जाने का इनकार करते हैं वो लोग** (क़ियामत में) **मेरी रहमत से ना उम्मीद होंगे** (यानी उस वक़्त पता चल जाएगा कि हम रहमत के हक़दार नहीं हैं) **और ये ही हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा**(23)

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ
یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ قَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَیْنِكُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ ثُمَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ
یَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّ یَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۵﴾ۙۖ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَ
قَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۶﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ جَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ
النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ وَ اٰتَیْنٰهُ اَجْرَهٗ فِی الدُّنْیَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۲۷﴾

आयत नं० 24 से 27

सो (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यह समझाने के बाद) **उन की क़ौम का** (आख़री) **जवाब बस यह था कि** (आपस में) **कहने लगे कि इनको या तो क़त्ल कर दो या इन को जला दो** (बस जलाने का सामान किया) **सो अल्लाह ने उन को उस आग से बचा लिया** (जिसका क़िस्सा सूरत अम्बिया में आ चुका है), **बेशक इस क़िस्से में उन लोगों के लिए जो कि ईमान रखते हैं बहुत सी निशानियां** (और दलीले) **हैं** (जैसे अल्लाह का क़ुदरत वाला होना, इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नबी होना, कुफ़्र व शिर्क का ग़लत होना)(24) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (समझाते हुए यह भी) **कहा**

कि तुम ने जो अल्लाह को छोड़ कर बुतों को (ख़ुदा) **बना रक्खा है बस यह तुम्हारे आपसी दुनियावी रिश्तो नातों की वजह से है** (जैसा कि देखा भी जाता है कि अक्सर आदमी दोस्तो और रिश्तेदारों के तरीक़े पर रहता है और हक़ को समझ कर भी डरता है कि सब दोस्त रिश्तेदार छूट जाएंगे), **फिर क़ियामत में** (तुम्हारा यह हाल होगा कि) **तुम में एक दूसरे का मुख़ालिफ़ हो जाएगा और एक दूसरे पर लानत करेगा, और** (अगर तुम इस बुत परस्ती से बाज़ न आए तो) **तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और तुम्हारा कोई मददगार न होगा(25) सो** (इतना समझाने पर भी उन की क़ौम ने न माना) **सिर्फ़ लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने उनकी तस्दीक़ की, और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि मैं** (तुम लोगों में नहीं रहता बल्कि) **अपने रब की** (बताई हुई जगह की) **तरफ़ वतन छोड़ कर चला जाऊंगा, बेशक वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है** (वो मेरी हिफ़ाज़त करेगा और मुझ को इस का फल देगा)(26) **और हम ने** (हिजरत के बाद) **उनको इसहाक़** (बेटा) **और याक़ूब** (पोता) **दिया और हमने उनकी नस्ल में पैग़म्बरी और किताब** (के सिलसिले) **को जारी रक्खा और हम ने उनका बदला उन को दुनिया में भी दिया और आख़रत में भी** (बड़े दर्जे के) **नेक बन्दों में होंगे**(27)

नोटः- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पहले पैग़म्बर हैं जिन को दीन के लिए वतन छोड़ना पड़ा और हिजरत करनी पड़ी। उन की यह हिजरत '75' साल की उम्र में हुई। (क़ुरतबी)

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ٘ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الرِّجَالَ وَ تَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ۬ وَ تَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا
بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ
اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ
قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ٘ۗ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَ لَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا
لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالُوْا لَا تَخَفْ وَ لَا تَحْزَنْ ٙ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَ اَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ
مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰۤى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ لَقَدْ تَّرَكْنَا
مِنْهَاۤ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 28 से 35

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुम से पहले दुनिया जहान वालों में किसी ने नहीं किया(28) क्या तुम मर्दों से** (बेहयाई का) **बुरा काम करते हो और** (भी बुरे-बुरे काम करते हो जैसे कि) **तुम डाका डालते हो और** (सितम यह है कि) **अपनी भरी मजलिस में बुरा काम करते हो** (जो और भी बड़ा गुनाह है), **सो उन की क़ौम का** (आख़री) **जवाब बस यह था कि हम पर अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो** (कि इन कामों पर अज़ाब होता है)(29) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने दुआ की कि या रब मेरे इन शरीर लोगों के मुक़ाबिले मेरी मदद की**(जिए और इन को अज़ाब से हलाक कर दी)**जिए(30) और** (उन की दुआ़ क़ुबूल होने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अज़ाब की ख़बर देने और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटा होने की ख़ुशख़बरी देने के लिए फ़रिशतों को भेजा बस) **हमारे** (वो) **भेजे हुए फ़रिशते जब इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के पास** (उनके बेटे इसहाक़ के पैदा होने की) **ख़ुशख़बरी लेकर आए तो** (बात चीत में) **उन फ़रिशतों ने** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से) **कहा कि हम उस बस्ती वालों को** (जिसमें लूत की क़ौम आबाद है) **हलाक करने वाले हैं** (क्योंकि) **वहां के रहने वाले बड़े शरीर हैं(31) इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि वहां तो लूत** (अलैहिस्सलाम भी मौजूद) **हैं** (कहीं उन को नुक़सान न पहुंचे), **फ़रिशतों ने कहा कि जो वहां** (रहते) **हैं हम को सब मालूम है, हम उन को और उनके घर वालों** (और मोमिनों) **को** (उस अज़ाब से) **बचा लेंगे** (इस तरह कि अज़ाब भेजने से पहले उन को बस्ती से बाहर ले जाएंगे) **सिवाए उनकी बीवी के कि वो अज़ाब में रह जाने वालों में से होगी(32) और** (फिर वहां से) **जब हमारे फ़रिशते लूत** (अलैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे तो लूत** (अलैहिस्सलाम) **उन** (के आने) **की वजह से** (इसलिए) **दुखी हुए** (कि वो बहुत हसीन जवानों की सूरत में आए थे और लूत अलैहिस्सलाम ने उन को इन्सान समझा और अपनी क़ौम की ग़लत हरकत का ध्यान आया) **और** (इस वजह से) **उन** (के आने) **की वजह से परीशान हुए और** (उनका यह हाल देखा तो) **वो फ़रिशते कहने लगे आप न डरिए न ग़म कीजिए** (हम इन्सान नहीं बल्कि अज़ाब के फरिशते हैं और उस अज़ाब से) **हम आप को और आप के ख़ास लोगों को बचा लेंगे सिवाए आप की बीवी के कि वो अज़ाब में रह जाने वालों में होगी(33)** (और आप के लोगों को इससे बचाकर) **हम इस बस्ती के** (बाक़ी) **रहने वालों पर एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में भेजने वाले हैं(34)** (बस वो बस्ती उलट दी गई और ग़ैब से पत्थर बरसाए

गये) **और हमने उस बस्ती के कुछ खुले निशान** (अब तक) **रहने दिये हैं उन लोगों** (की सीख) **के लिए जो समझ रखते हैं** (जैसा कि मक्के वाले मुल्क शाम के सफ़र में उन उजड़ी हुई जगहों को देखते थे और कुछ डर कर ईमान ले आते थे)(35)

नोटः- मर्द का मर्द के साथ बुरा काम करना ज़िना से भी ज़्यादा बड़ा गुनाह है यह गुनाह इस क़ौम से पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया था और जंगल के जानवर भी इससे परहेज़ करते हैं।

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ ارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ لَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَ عَادًا وَّ ثَمُوْدَا۠ وَ قَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ
مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَ كَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَ قَارُوْنَ وَ
فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ ۫ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَ مَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا
اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا
بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَىْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَ
تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَ مَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 36 से 44

और मदयन वालों के पास हम ने उन (की बिरादरी) **के भाई शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा सो उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम** (के लोगों) **अल्लाह की इबादत करो** (और शिर्क छोड़ दो) **और क़ियामत के दिन से डरो** (और उसके इनकार से बाज़ आओ) **और** (लोगों का हक़ मार कर) **ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ(36) सो उन लोगों ने शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया बस ज़लज़ले ने उन को आपकड़ा फिर वो अपने घरों में दब कर रह गये(37) और हम ने आद व समूद को भी** (उन के कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया है**

और उन की तबाही तुम को उन के रहने की जगहों से दिखाई दे रही है (कि उनकी उजड़ी बस्तियों के खन्डर मुल्क शाम को जाते हुए ऐ मक्के वालों तुम्हारे रास्ते पर मिलते हैं), **और** (हालत उनकी यह थी कि) **शैतान ने उन के** (बुरे) **कामों को उन की नज़र में अच्छा बनाकर उन्हें** (सही) **रास्ते से रोक रक्खा था और वो लोग** (दुनिया के कामों में बड़े) **होशियार थे** (बेवक़ूफ़ न थे मगर इस बारे में उन्होंने अपनी अक़्ल से काम न लिया)(38) **और हम ने क़ारून और फ़िरऔन और हामान को भी** (उन के कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया और उन** (तीनों) **के पास मूसा** (अलैहिस्सलाम) **खुली दलीलें** (हक़ की) **लेकर आए थे फिर** (भी) **उन लोगों ने ज़मीन में सरकशी की और वो** (हमारे अज़ाब से) **भाग न सके**(39) **हम ने** (उन में से) **हर एक को उस के गुनाह की सज़ा में पकड़ लिया, सो उनमें कुछ पर तो हम ने** (तूफ़ानी) **हवा भेजी** (मुराद इससे क़ौमे आद है) **और उनमें कुछ को डरावनी आवाज़ ने आ दबाया** (मुराद इससे क़ौमे समूद है) **और उनमें कुछ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया** (मुराद इससे क़ारून है) **और उनमें कुछ को हम ने** (पानी में) **डुबो दिया** (मुराद इससे फ़िरऔन और हामान हैं) **और** (उन लोगों पर जो अज़ाब आए तो) **अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता** (यानी बिना वजह सज़ा देता) **लेकिन ये लोग** (शरारतें करके) **अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे** (कि अपने को अज़ाब का हक़दार बनाया और बर्बाद हुए तो अपना नुक़सान ख़ुद किया)(40) **जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं उन लोगों की मिसाल मकड़ी की सी है जिस ने एक घर बनाया, और कुछ शक नहीं कि सब घरों में ज़्यादा कमज़ोर मकड़ी का घर होता है** (बस जैसा उस मकड़ी ने अपनी सोच में अपना ठिकाना बनाया है मगर असलीयत में वो ठिकाना बहुत कमज़ोर होने की वजह से न होने के बराबर है इसी तरह ये मुशरिक लोग झूटे माबूदों को अपनी पनाह समझते हैं मगर असलीयत में वो पनाह कुछ नहीं है), **अगर वो** (असलीयत को) **जानते तो ऐसा न** (करते यानी शिर्क न) **करते**(41) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **उन सब चीज़ों** (की असलीयत और कमज़ोरी) **को जानता है जिस-जिस को वो लोग अल्लाह के सिवा पूज रहे** (हैं बस वो चीज़ें तो बहुत कमज़ोर) **हैं, और वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला है**(42) **और** (चूंकि हम इन चीज़ों की असलीयत को जानते हैं इसलिए) **हम इन** (क़ुरआनी) **मिसालों को** (जिसमें एक मिसल ऊपर आई है) **लोगों के** (समझाने के) **लिए बयान करते हैं, और** (चाहिए था कि बात समझते मगर) **इन मिसालों को बस इल्म वाले ही समझते** (हैं जो इन बातों में ग़ौर फ़िक्र करते) **हैं**(43) **अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक बनाया है** (जैसा कि वो भी मानते हैं), **बेशक**

ईमान वालों के लिए इसमें (उसके इबादत का हक़दार होने की) **बड़ी दलील है**(44)।

नोटः- एक हदीस में है कि "आलिम वो ही आदमी है जो अल्लाह तआ़ला के कलाम में ग़ौरो फ़िक्र करे और उसके हुक्मों पर अमल करे और उसको नाराज़ करने वाले कामों से बचे"।

(इमाम बग़वी)

इससे मालूम हुआ कि क़ुरआन व हदीस के सिर्फ़ अलफ़ाज़ समझ लेने से अल्लाह के नज़दीक कोई आदमी आलिम नहीं होता जब तक कि क़ुरआन में ग़ोरो फ़िक्र की आदत न डाले और जब तक कि अपने अमल को क़ुरआन के मुताबिक़ न बनाए।